वर्तमान दौर की मीडिया में महिलाओं की भूमिका का मूल्यांकन

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र

मानव द्वारा जो कुछ देखा और महसूस किया जाता है उसे वह अपनी प्रवृत्ति के अनुसार अन्य व्यक्तियों तक पहुँचाना चाहता है। मानव मन का मनोविज्ञान भी होता है कि अपने साथ अनुभव की जाने वाली अन्य जनों के साथ के की जाने वाली बातों को वह जानना भी चाहता है। अर्थात किसी घटना को परखना और उसका वर्णन करना मानव मन की एक सहज वृत्ति एवं प्रवृत्ति है। इसी भावाभिव्यक्ति की प्रवृत्ति के कारण जनमाध्यमों का आविष्कार हुआ अर्थात दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि जिस प्रकार ज्ञान प्राप्त करने की उत्कंठा, चिन्तन एवं अभिव्यक्ति की आकांक्षा ने भाषा को जन्म दिया, ठीक उसी प्रकार समाज में एक दूसरे के कुशल क्षेम जानने की प्रबल इच्छा शक्ति ने समाचार पत्रों के प्रकाशन को बढ़ावा दिया। पहले ज्ञानरूपी दिव्यशक्ति जो सुविधा प्राप्त कुछ मुट्ठी भर लोगों की जागीर हुआ करती थी, पत्रकारिता ने इस मिथक को तोड़कर इसे आमजन को सर्वसुलभ कराया गया। इस प्रकार परिस्थितियों के अध्ययन, चिन्तन, मनन और आत्माभिव्यक्ति की प्रवृत्ति तथा सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के प्रति व्यग्रता ने पत्रकारिता को जन्म दिया। श्रीमद्भगवत गीता में जगह–जगह पर शुभदृष्टि का प्रयोग किया गया है। यह शुभदृष्टि ही पत्रकारिता है जिसमें गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है। महात्मा गाँधी जी तो पत्रकारिता में समदृष्टि को महत्व देते थे। समाजहित में सम्यक् प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जा सकता है। असत्य, अशिव व असुन्दर पर सत्यं, शिवं सुन्दरम की शंखध्वनि ही पत्रकारिता है। समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को भी पत्रकारिता कहते हैं। समाज चाहे जो भी उसके सामाजिक,राजनीतिक,आर्थिक एवं समसामयिक परिवर्तन में पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

पत्रकारिता के महत्व को कुछ विद्वानों की दृष्टि से देखा जाए तो वह इस प्रकार है– गाँधी जी के शब्दों में कहें तो–''पत्रकारिता का प्रथम उद्देश्य जनता की इच्छाओं और विचारों को समझना तथा उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना तथा तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भीकतापूर्वक प्रकट करना है।'' महादेवी वर्मा के शब्दों में पत्रकारिता को परिभाषित करें तो–''पत्रकारिता एक रचनाशील विधा है। इसके बगैर समाज को बदलना असम्भव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कर्त्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए, क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाएगा। राजा राम मोहन राय ने पत्र–पत्रिकओं के उद्देश्य पर अपनी दृष्टि को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि–'मेरा उद्देश्य मात्र इतना ही है कि जनता के सामने ऐसे बौद्धिक निबन्ध उपस्थित करूँ जो उनके अनुभव को बताएँ और सामाजिक प्रगति में सहायक सिद्ध हों। मैं अपनी शक्ति भर शासकों को अपनी प्रजा की परिस्थितियों का सही परिचय देना चाहता हूँ और प्रजा को उनके शासकों द्वारा स्थापित विधि व्यवस्था से परिचित कराना चाहता हूँ ताकि शासक जनता को अधिक से अधिक सुविधा देने का अवसर और सुरक्षा दे सकें तथा जनता इससे अवगत हो सके।'' इसमें कोई दो

राय नहीं कि विशाल जनमानस के लिए ज्ञान का सैलाब व सम्प्रेषण की अभूतपूर्व मशाल कही जाने वाली मीडिया एक 'मिशन' के रूप में कार्य करती है। हॉलाकि आज मिशन का पर्याय बदल गया है।

मिशनरी पत्रकारिता के रूप में कार्य करने वाली पत्रकारिता अपने वास्तविक मिशन से भटक गयी है। उसके साथ अधिकतर ऐसा होता है कि आर्थिक लालच में मीडियाकर्मी व पत्रकार जन प्रतिनिधियों व सरकारी एजेंसी या सरकारी कर्मचारियों से सीधे तौर पर रिश्वत माँगते हैं। अब यदि उक्त संस्थाओं या व्यक्ति विशेष द्वारा अपनी कर्तव्यनिष्ठा या जिम्मेदारी के निर्वहन में जरा सी ढिलाई बरती गई तो उसे केवल समझाइस देकर सुधार करने का मौका दिया जाना चाहिए न कि सीधे तौर पर रुपए की माँग या पेपर में छापने की धमकी या चैनल में दिखाने का आतंक पैदा कर आर्थि क दोहन किया जाना। इससे मीडिया की छवि धूमिल होने के साथ ही अन्य समस्याएँ और विकराल हो जाती हैं। हाँ यदि कोई गंभीर मामला पता चलता है तो उसे लोकतांत्रिक तरीके से सार्वजनिक किए जाने की जरूरत अवश्य पड़ती है। यही पत्रकारिता एवं पत्रकारों की समुचित भूमिका होनी चाहिए। छोटी–छोटी बातों एवं मसलों पर निजी चैनलों में सत्ता संघर्ष और वर्चस्व की होड़ के कारण बड़बोलापन और वाक् अतिरेक बहुत अधिक बढ़ जाता है। यह सब टी0आर0पी0 बढ़ाने और लोगों का माखौल उड़ाने के लिए या राजनीति तथा शासन व्यवस्था की खिल्ली उड़ाने और उन्हें छोटा तथा निरर्थक सिद्ध करने के उद्देश्य से किया जाता है। इसमें वास्तविकता चाहे जो भी हो परन्तु पत्रकारिता का धर्म तथ्यपूर्ण समाचार और निष्पक्ष विश्लेषण करना है,वह सरकार और जनता के बीच एक निर्णायक की भूमिका का निर्वहन करता है। वह स्वयं किसी पक्ष का भाग नहीं हो सकता है, तभी उसकी विश्वसनीयता बनी रह सकती है।

जहाँ तक पत्रकारिता के विवाद और हस्तक्षेप की बात है वह किसी से छिपे नहीं हैं। आज की पत्रकारिता पर अनेक तरह के आरोप मड़े और गढ़े जाते हैं कि वह सांप्रदायिकता के साथ नस्लवादी घृणा फैलाने का भी काम कर रही है और इसका शिकार देश की अधिकतर जनसंख्या हो रही है। इसकी सबसे अधिक मार उत्तर पूर्वी राज्यों के लोगों पर पड़ती है। दिल्ली और एनसीआर में यह बखूबी देखने को मिलता है कि इन राज्यों के प्रति मीडिया की उदासीनता और वहाँ के बारे में अज्ञानता हैरान करने वाली है। जिस तरह कोई भी पार्टी जो सत्तापर आसीन होती है। तत्तकालीन सत्ता अपनी विफलताओं पर पर्दा डालने के लिए किसी एक वाद का सहारा लेती है। यही कार्य पत्रकारिता ने भी किया है। उनके लिए किसी वाद का मतलब है–कि साम्प्रदायिकता को बढ़ाना तथा ऐसे मसले पर वही सरकारी भाषा बोलिए जो सरकार चाहती हैं। सरकार की हर बात का समर्थन कीजिए। शैक्षिक एवं धार्मिक संस्थानों को चिन्हित कर उन्हें जनता विरोधी बताकर खलनायक बना दीजिए। ऐसी समझ रखने वाले इन तथा–कथित मीडिया कर्मियों से कौन कहे कि राष्ट्रवाद पर साहित्यकारों और विद्वानों ने कितना कुछ लिखा और बोला है कितने कुछ काले पन्ने किए हैं। पेड और फेंक न्यूज़ से यह बात जगजाहिर हो चुकी है कि जिस मीडिया का काम जनता की समस्याओं और अधिकारों के दमन को सामने लाना था, वह पूरी तरह तत्कालीन सत्ता और पूँजी के हितों के आगे अपने को गिरवी रखकर बेच चुकी होती है। वस्तुस्थिति यह है कि राजनीति, सत्ता, मीडिया और लोकतंत्र के वर्तमान गठजोड़ और उसके कामकाज को पुराने तौर तरीके से नहीं समझा जा सकता, उसके लिए अब नए कैनन विकसित करने होंगे। इतिहास इस बात का साक्षी रही है कि राजनीति और पत्रकारिता के रिश्तों में बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है किंतु तब दोनों अपना काम करते रहते थे

लेकिन पिछले कुछ वर्षों से यह घनिष्ठ सम्बन्ध वाला रिश्ता अतिघनिष्ठता में बदल गया है। मीडिया राजनीति के सभी ऊँच–नीच को माफ करता है तो राजनीति भी उसे अपने अंदाज में प्यार भरी शाबाशी देता है। दोनों मिलकर एक दूसरे को फायदा पहुँचाते हैं,जिसका परिणाम यह होता है कि मीडिया के जरिए बड़े पैमाने पर गलतफहमी और असत्य का प्रचार हो रहा है। वर्तमान का दौर पोस्ट ट्रुथ का दौर है। जहाँ भ्रामक विवरण, झूठ और तथ्यों के अंबार में सच दब गया है। जॉर्ज ऑरवेल ने ठीक ही लिखा था कि जब चहुँओर झूठ,छल, प्रपंच का बोलबाला हो, तब सच बोलना भी एक क्रांतिकारी कदम होता है लेकिन मीडिया यह कदम उठाने को तैयार नहीं है।

पत्रकारिता जगत में आधी दुनिया की भागीदारी को लेकर प्रारम्भ में बहुत उत्सुकता और सम्मान का पहलू नहीं माना जाता था। लोगों की यह धारणा थी कि पत्रकारिता में महिलाओं की भागीदारी के लिए यह क्षेत्र उपयुक्त नहीं है,इस सम्बन्ध में उनकी धारणा थी कि यहाँ महिलाएँ सुरक्षित नहीं हैं और उनके साथ भेदभाव और शोषण के साथ बदसलूकी की संभावनाएँ अधिक होती हैं। कुछ हद तक यह सत्य था और इस पैशन से जुड़ी महिलाओं ने इसे स्वीकार भी किया। लेकिन वर्तमान में इन अवधारणाओं को खण्डित कर पत्रकारिता में भारतीय महिलाओं ने बीते कुछेक दशकों में काफी कुछ प्रगति की है। महिला पत्रकारों ने दंगे, युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं को न्यूज कवर करने के लिए अपनी जान की वाजी लगा दी है। महिलाएँ वर्तमान में कई न्यूज चैनलों का चेहरा बनी हुई हैं और उन्होंने अनेक दुरूह विषयों की रिपोर्टिंग भी की है जिसमें लंबे समय तक पुरुषों का वर्चस्व रहा है। आज महिलाएँ न्यूज कवरेज को नया दृष्टिकोण प्रदान कर रही हैं। हो सकता है कि पितृसत्तत्मक सोच के लोगों की दृष्टि में यह बेहतर न हो, लेकिन अलग जरूर है। महिलाएँ किन विषयों को कवर करना चाहती हैं या फिर किस तरह से स्टोरी बताना चाहती हैं, इसे लेकर महिलाओं की अलग–अलग राय हो सकती है। कई संस्कृतियों में तो उन्हें पुरुष सहकर्मियों के मुकाबले अधिक सहूलियत होती है। मसलन, मुस्लिम देशों में महिला पत्रकार ही महिलाओं का इंटरव्यू कर सकती हैं, लेकिन पुरुष नहीं। आज से कुछ साल पहले तक पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत ही कम महिलाएँ थीं, लेकिन वर्तमान समय में स्थिति थोड़ी भिन्न और बेहतर सिद्ध हो रही है।

पत्रकारिता क्षेत्र में जहाँ तक महिलाओं की भागीदारी का सवाल है,तो आज पत्रकारिता जगत का ऐसा कोई कोना नहीं जहाँ महिलाएँ आत्मविश्वास और दक्षता से इस क्षेत्र में अपना कार्य कुशलता से न कर रही हों। पिछले कुछेक वर्षों में प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और इंटरनेट पत्रकारिता की दुनिया में महिलाओं की भागीदारी उत्तरोत्तर बड़ी है। महिलाओं के पत्रकारिता के इस क्षेत्र में उभरते स्वरों का एक अहम कारण यह भी है कि पत्रकारिता के लिए जिस वांछित संवेदनशीलता की जरुरत होती है वह महिलाओं में नैसर्गिक रूप से पाई जाती है। पत्रकारिता में एक विशिष्ट किस्म की संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है और समानांतर रूप से कुशलतापूर्वक अभिव्यक्त करने की भी। संवाद और संवेदना के सुनियोजित सम्मिश्रण का नाम ही सुन्दर पत्रकारिता है। महिलाओं में संवाद के स्तर पर स्वयं को अभिव्यक्त करने का गुण भी पुरुषों की तुलना में अधिक बेहतर होता है। यही वजह रही है कि पत्रकारिता में महिलाओं की गरिमामयी भागीदारी बढ़ी है।

प्रस्तुतीकरण वी दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय महिला पत्रकार अपने पेशे को लेकर ईमानदार और समर्पित रहती हैं, और उनका ध्यान सदैव लक्ष्य पर रहता है। आज पत्रकारिता का क्षेत्र महिलाओं के लिए सुरक्षित है। बस इसे

वे अपनी ईमानदारी और सम्मान से बचा ले जाएँ। मीडिया में इस ओर रास्ता खुद महिलाएँ बना रही हैं। हिन्दी पत्रकारिता का स्वर्ण युग (महिलाआ के लिए) आना बाकी है। लेकिन यकीन मानिए, बिना महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के ये असंभव होगा।

प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि पत्रकारिता में अनुशासन कैसे कायम किया जाए? पत्रकारिता में जहाँ तक अनुशासन व्यवस्था पर नियन्त्रण की बात है इसे चार तरह से नियंत्रित किया जा सकता है। अनुशासन को लागू करने का सबसे बड़ा संस्थान परिवार और दूसरा है शिक्षा व्यवस्था, तीसरा है कानून,चौथा है मीडिया। समाज में जब अनुशासन का मंत्र काम करता है तो वह विशेष लोगों के लिए नहीं होता बल्कि वह सबके लिए होता है। विशेषकर महिलाओं को इन चारों क्षेत्रों और उनसे जुड़े संस्थानों की ओर से थोपे गए अनुशासन में जीना होता है। यहाँ यह भी कहा जा सकता है कि इन संस्थानों के साथ स्त्री का बैर भाव है, तो अतिश्योंक्ति नहीं होगी, जबकि स्त्री इन संस्थानों के आकर्षण, प्रभाव और दबाव से अपने को मुक्त नहीं कर पाती है। इन संस्थानों के जरिए पितृसत्ता अपने को नए–नए रूपों में रूपांतरित करती रहती है। यहाँ इन बातों को कहने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि जो महिलाएँ अपने शरीर को समय अनुकूल रूप में आंकलन करे रूपांतरित कर लेती हैं उन्हें अनुशासनात्मक कार्यवाही का सामना नहीं करना पड़ता है बल्कि उसके विपरीत उससे कहीं ज्यादा कठोर पाबंदियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि यह समाज पुरुष वर्चस्व से संचालित होता आ रहा है ऐसी स्थिति में इतर लिंगगामी हेट्रोसेक्सुअल महिलाओं को खासतौर पर परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इन महिलाओं से कोई आंतरिक संबंध नहीं रखता ,यही स्थिति अन्य श्रेणी की महिलाओं की भी हो सकती है।

लगभग दो सौ पचास वर्षों के भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में यदि कोई मिशनरी परंपरा थी तो वह अटूट और अविच्छिन्न ना होकर किसी हद तक बिखरी हुई थी। उसके प्रभाव के लिए पत्रकारिता अपने आपमें साध्य ना होकर एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक फौरी साधन मात्र थी। निसंदेह भारत के पहले समाचार पत्र 'द बंगाल गजट' ने गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स के भ्रष्टाचार आदि कारनामों को उजागर किया, जिसके चलते संस्थापक संपादक जेम्स आगस्टक हिक्की को पहले कारावास और फिर भारत से निष्कासन का दंड भोगना पड़ा। अपने स्थापना काल से पत्रकारिता पर यह जिम्मेदारी थी कि वह हर समयकाल में केवल समाचार अथवा विचार का माध्यम ही नहीं बनेगा बल्कि लोगों को चेतनशील नागरिक बनाने की जिम्मेदारी भी निभाएगा। पत्रकारिता को इस जिम्मेदारी की याद दिलाने पर आज जो लोग इस बात की वकालत करते हैं कि पत्रकारिता महज एक उत्पाद है, वह मूलतः लोकतंत्र के विरोधी हैं। लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए पत्रकारिता का बचा रहना कितना जरूरी है उन्हें यह भी नहीं मालूम। वर्तमान पत्रकारिता में सरकार को लेकर अन्धभक्ति जैसा वातावरण निर्मित हो चुका है। और इसके लिए पूरी तरह ध्रुवीकरण हो चुका है। इस ध्रुवीकरण में जिन पत्रकारों ने किसी पाले में रहना मंजूर नहीं किया उन्हें खबरों की दुनिया से ही बाहर कर दिया जाता है। सत्ता को यह कतई मंजूर नहीं है कि सरकारी आंकड़ों की चकाचौंध के बरक्स भारत में फैले अंधेरे को दिखाया जाए। इसके लिए लिहाजा साम,दाम,दंड का इस्तेमाल कर उन्हें मीडिया घरानों से चलता कर दिया जा रहा है। आंकड़े तो यह भी बताते हैं कि पिछले कुछ दशकों में देश में अनेक पत्रकारों की हत्या हो चुकी है और सैकड़ों लोगों के गंभीर मामले आ चुके हैं इन सबके साथ में महिला महिला पत्रकारों पर हमले तेजी से बढ़े हैं।

सन्दर्भ

1. धर प्रांजल,समकालीन वैश्विक पत्रिका में अखबार—वाणी प्रकाशन दरियागंज ,नई दिल्ली—प्रथम संस्करण 2013
2. भारती जयप्रकाश,हिन्दी पत्रकारिता दशा एवं दिशा,प्रवीण प्रकाशन ,नई दिल्ली—1994
3. संचार माध्यम, दिसम्बर 1981, भारतीय जनसंचार संस्थान,
4. उत्तर प्रदेश ,हिन्दी पत्रकारिता विशेषांक ,मार्च—अप्रैल,1976
5. लाल डॉ0 गुरचरण,पत्रकारिता के सिद्धांत—भारत बुक सेंटर ,लखनऊ, 2000
6. चतुर्वेदी जगदीश्वर—मीडिया समग्र(11 भागों में) ,स्वराज प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण 2013
7. चतुर्वेदी जगदीश्वर—आधुनिकतावाद,साहित्य और मीडिया—अनामिका पब्लिकेशंस डिस्ट्रीब्यूटर लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019
8. परमार डॉक्टर तारा, महिला सर्जन के विविध आयाम—भारतीय दलित साहित्य,अकादमी ,उज्जैन—2010
9. भारद्वाज राजकुमार,मीडिया रिपोर्टिंग : वर्तमान और भविष्य,अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्टीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली—संस्करण 2020
10. मीडिया—विमर्श, जुलाई—दिसम्बर 2008, सितम्बर 2011,सं0 श्रीकान्त सिंह मीडिया विमर्श, द्विवेदी संजय
11. बारी राकेश,पत्रकारिता की खुरदरी जमीन की,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली—संस्करण 2015
12. खान जाहिद,आधी आबादी—अधूरा सफर—अनामिका पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर प्राइवेट लिमिटेड,नई दिल्ली,सं. 2019
13. पांडे कैलाशनाथ—हिंदी पत्रकारिता—संवाद और विमर्श,लोकभारती प्रकाशन महात्मा गांधी मार्ग,इलाहाबाद,संस्करण 2017
14. तिवारी डॉ0 अर्जुन,हिंदी पत्रकारिता का वृहद इतिहास—वाणी प्रकाशन संस्थान,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण 1995
15. चौबे कृपाशंकर,पत्रकारिता के उत्तर आधुनिक चरण,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली—2005
16. भानावत संजीव—पत्रकारिता का इतिहास एवं जन संचार माध्यम,यूनिवर्सिटी पब्लिकेशंस, जयपुर—2008
17. सिंह डॉ0 अजय कुमार, सिर्फ पत्रकारिता—लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद—2013,पृ0—16
18. यादव डॉ0 वीरेन्द्र सिंह, शुक्ल डॉ0 अमित, भारत में हिन्दी पत्रकारिता के उभरते परिदृश्य और आधी दुनिया की भागीदारी—अल्फा पब्लिकेशन्स,नई दिल्ली—2013
19. कुलश्रेष्ठ संदीप ,भारत में प्रिन्ट,इलेक्टॉनिक और न्यू मीडिया—प्रतिभा प्रकाशन,नई दिल्ली,2018
20. मंडल दिलीप,मीडिया का अंडरवर्ल्ड पेड न्यूज़ कारपोरेट और लोकतंत्र,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण 2018

21. प्रवीर, राकेश,भारत में प्रिन्ट, इलेक्टॉनिक और न्यू मीडिया– प्रतिभा प्रकाशन,नई दिल्ली–2019
22. बाजपेयी अंबिका प्रसाद–समाचार पत्रों का इतिहास–ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी–संस्करण 1986
23. सिंह डॉ. धीरेन्द्र, हिन्दी पत्रकारिता–विश्वविद्यालय प्रकाशन, बनारस–2001.
24. मीडिया–मीमांसा,जुलाई–सितंबर 2017